विचार बिन्दु

सबकी आत्मा एक जैसी है, सबकी आत्मा की शक्ति एक समान है। कुछ की शक्ति प्रकट हो गयी है और दूसरों की प्रकट होनी बाकी है। –महात्मा गाँधी

हमारा सपना: देश का हर नागरिक खुशहाल हो!

वर्ल्ड हैप्पीनेस (विश्व खुशहाली) रिपोर्ट, 2024 आ गई है और भारत की स्थिति इसमें पिछले बरस वाली ही है। 143 देशों की इस सूची में हम 126वें स्थान पर हैं। लगातार सातवें बरस फिनलैण्ड इस सूची में शीर्ष पर है। सूची में सबसे नीचे है अफ़गानिस्तान। लगभग एक दशक तक शीर्ष 20 स्थानों में टिके हुए अमरीका और जर्मनी इस बार फिसल कर क्रमशः 23वें और 24वें स्थान पर चले गए हैं जबकि कोस्टारिका और कुवैत पहली बार शीर्ष बीस में जगह पा गए हैं।

जब भी ऐसी कोई रिपोर्ट आती है, और आम तौर पर वह पश्चिम से ही आती है, उसमें भारत बहुत अच्छी स्थिति में नहीं होता है। इस पर स्वभावतः हमारे यहां कई तरह की प्रतिक्रियाएं होती हैं। सबसे पहले तो हमारी सरकार उस रिपोर्ट को नकारती है। फिर हममें से बहुत सारे लोग भी उन मानदण्डों पर सवाल उठाते हैं जो पश्चिम के लिए अनुकूल और हमारे लिए अनुपयुक्त होते हैं। इस तरह की रिपोर्ट कितने कम लोगों से पड़ताल कर बनाई जाती है, इस पर भी यह कहते हुए आपत्ति की जाती है कि उस रिपोर्ट की विश्वसनीयता संदिग्ध है। बहुतों को लगता है कि ऐसी रिपोर्ट्स भारतीय हितों और प्रतिष्ठा को आहत करती हैं। लेकिन कुछ अन्य लोग इस तरह की रिपोर्ट्स से आहत होने की बजाय आत्मावलोकन और स्थितियों को बेहतर बनाने की ज़रूरत पर बल देते हैं। ऐसा नहीं है कि ये लोग औरों की तुलना में कम देशभक्त हैं। बस, इनका सोचने का नज़रिया अलहदा होता है। इधर इस तरह की रिपोर्ट्स से क्षुब्ध होकर यह भी कहा जाने लगा है कि क्यों न भारत ख़ुद अपने सर्वेक्षण करे और अपनी रिपोर्ट्स ज़ारी करे! शायद इस दिशा में कुछ प्रयत्न होने शुरू हुए भी हैं। इन प्रयत्नों के परिणामों के आने से पहले कुछ भी कहना अनुचित होगा। कामना करें कि ये प्रयत्न वस्तुनिष्ठ और ईमानदार हों और खींच तान कर अपने देश को ऊपर लाने के मोह से बचे रहें।

फिलहाल, हम एक बार फिर इसी रिपोर्ट की तरफ लौटते हैं। जैसा कि बताया जाता है, यह रिपोर्ट तैयार करने के लिए जिन मापदण्डों का सहारा लिया जाता है उनमें व्यक्ति द्वारा स्वयं अपनी खुशहाली का आकलन, प्रतिव्यक्ति जीडीपी, सामाजिक संबल, स्वस्थ जीवन प्रत्याशा, स्वतंत्रता, उदारता और भ्रष्टाचार की स्थितियां प्रमुख हैं। हेलसिंकी विश्वविद्यालय से संबद्ध एक शोधकर्ता का कहना है कि फिनलैण्ड वासियों का प्रकृति से नज़दीकी रिश्ता, उनके दैनंदिन जीवन में विद्यमान जीवन और काम का आदर्श संतुलन, कामयाबी के बारे में उनका भिन्न दृष्टिकोण, ऐसी जीवन दृष्टि जो आर्थिक उपलब्धियों को बहुत ज़्यादा अहमियत नहीं देती है, सही अर्थों में कल्याणकारी समाज व्यवस्था, सरकारी संस्थाओं पर जनता का भरोसा, बहुत कम भ्रष्टाचार और सबके लिए सुलभ शिक्षा व चिकित्सा सुविधाएं उन कुछ ख़ास बातों में से हैं जिनकी वजह से यह देश खुशहाली के मामले में शीर्ष पर बना हुआ है। ज़्यादा कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है, हम ख़ुद इन मापदण्डों पर स्वयं को परख सकते हैं! मैं यह भी जानने को उत्सुक हूं कि कि अगर खुशहाली के ये पैमाने अनुचित व अतार्किक हैं तो ऐसे कौन-से पैमाने हो सकते हैं जिन पर हम किसी का-कहें अपना-आकलन कर सकते हैं! किसी भी सूची में भारत अगर बहुत नीचे आता है तो हममें से किसी भी भारतीय को प्रसन्नता नहीं होती है। हम चाहते हैं कि हमारा देश बेहतर रेटिंग पाए। लेकिन उसके लिए ख़ुद हमें भी काफी कुछ करना होगा। यह विचार किया जाना चाहिए कि हमारे यहां चिकित्सा, स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं की स्थिति क्या है? और ज़्यादा तो क्या बात करें, क्या हम अपने नागरिकों को शुद्ध पेयजल भी सुलभ करा सके हैं? क्या हमारा राज्य सही मानों में कल्याणकारी राज्य है? क्या हमें अपनी सरकारी संस्थाओं पर पूरा भरोसा है? क्या हम उनके सहारे सुखी और संतुष्ट रह सकते हैं? क्या हमें अपने रोज़मर्रा के जीवन में भ्रष्टाचार का सामना नहीं करना पड़ता है? वह पहले से कम हुआ है या ज़्यादा हुआ है? गरीब और अमीर के बीच की खाई कम हुई है या ज़्यादा चौड़ी हुई है? और सबसे अंत में यह बात, कि क्या आम आदमी अपने सीने पर हाथ रखकर यह कहने की स्थिति में आ गया है कि वह खुशहाल है? आप उनकी बात छोड़ दीजिए जिनके यहां पैसा बरस रहा है, और उनकी बात भी छोड़ दीजिए जिन्हें अपने ख़ास राजनीतिक चश्मे की वजह से चारों तरफ हरा ही हरा दीखता है।

संयुक्त परिवार अतीत की बात हो चुके हैं। नई पीढ़ी शिक्षा, काम और रोज़गार के लिए घर से दूर, बहुत दूर जाने में संकोच नहीं करती है और यह पीढ़ी अपने मां-बाप के प्रति लगाव की वजह से उन्हें अपने साथ भी रखना चाहती है, लेकिन वृद्ध मां-बाप अपनी ज़मीन को छोड़कर खुश नहीं रह पाते हैं।

अब एक और बात। मैंने जिस रिपोर्ट की चर्चा से अपनी बात शुरू की है उसमें एक बात यह रेखांकित की गई है कि उत्तरी अमरीका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्ड को छोड़कर शेष विश्व में वृद्धों की तुलना में युवा लोग अधिक खुशहाल पाए गए हैं। जिन तीन देशों का अभी नाम लिया गया है उनमें 2006-2010 की तुलना में युवाओं की खुशहाली में कमी देखी गई है। इस बार की रिपोर्ट में एक पूरा अध्याय भारत में उम्रदराज़ वयस्कों की खुशहाली के अध्ययन को भी समर्पित है। यहीं यह बात भी याद रखने की है कि भारत साठ साल से ऊपर वाले 14 करोड़ लोगों के कारण वृद्ध आबादी वाला दुनिया कादूसरा सबसे बड़ा देश है। इस मामले में हम चीन से थोड़ा ही पीछे हैं। और जैसे इतना ही काफी न हो, भारत में इस आयु वर्ग के लोगों की वृद्धि दर देश की सकल जनसंख्या की वृद्धि दर से तिगुनी है। इसलिए जनसंख्या के इस बड़े हिस्से की खुशहाली की बात करना बहुत ज़रूरी हो गया है। यह अध्याय बताता है कि भारत में वैवाहिक स्थिति, सामाजिक संलग्नताएं और दैहिक स्वास्थ्य भी वृद्धजन की खुशहाली की अनुभूति को प्रभावित करते हैं। रिपोर्ट कहती है कि भारत में वृद्धजन वहीं अपना शेष जीवन बिताना पसंद करते हैं जहां वे अब तक रहे हैं, यह भी कि वे अपनी स्वतंत्रता चाहते हैं और सामाजिक रिश्ते उन्हें आकर्षित करते हैं। यहीं यह उल्लेख किया जा सकता है कि भारत में पारिवारिक ढांचा बड़े बदलाव के दौर से गुज़र रहा है। संयुक्त परिवार अतीत की बात हो चुके हैं। नई पीढ़ी शिक्षा, काम और रोज़गार के लिए घर से दूर, बहुत दूर जाने में संकोच नहीं करती है और यह पीढ़ी अपने मां-बाप के प्रति लगाव की वजह से उन्हें अपने साथ भी रखना चाहती है, लेकिन वृद्ध मां-बाप अपनी ज़मीन को छोड़कर खुश नहीं रह पाते हैं। अपने घर में वे जिस जीवन शैली के अभ्यस्त हो जाते हैं, बच्चों के यहां उन्हें उस जीवन-शैली के साथ जो समझौते करने होते हैं वे भी उन्हें रास नहीं आते हैं।

रिपोर्ट में बताया गया है कि अधिक आयु के वे भारतीय जो विवाहित हैं और शिक्षित भी हैं वे अन्यों की तुलना में अधिक खुश महसूस करते हैं। अलबत्ता इस आयु वर्ग की स्त्रियां पुरुषों की तुलना में कम खुश पाई गई हैं। लेकिन जहां स्त्रियां सामाजिक रूप से सक्रिय हैं और जिन्हें पारिवारिक व सामाजिक संबल प्राप्त है, वे अपेक्षाकृत खुश हैं। हां, जिन पुरुषों के रहन-सहन की व्यवस्था सही नहीं है, जिन्हें तरह-तरह के भेदभाव सहन करने पड़ रहे हैं और जो अपनी सेहत की स्थिति से असंतुष्ट हैं, उनकी खुशहाली का स्तर नीचा है। यह रिपोर्ट इस बात को नकारती है कि इस आयु वर्ग में खुशहाली का कोई सीधा रिश्ता आर्थिक संपन्नता से है। इस वर्ग की खुशहाली उनके रहन-सहन की सुविधाओं, बेहतर सेहत और इस बोध से कि उनके साथ कोई भेद भाव नहीं बरता जा रहा है, निर्धारित होती है।

ऊपर जो बातें कही गई हैं, सामान्यतः उनसे असहमति का कोई कारण नज़र नहीं आता। मुझे इस बात को लेकर विवाद अनावश्यक लगता है कि कोई देश विशेष हमसे ऊपर या नीचे क्यों है! असल में विवाद नीचे होने पर तो होता नहीं, ऊपर होने पर ही होता है। वैसे ऐसी असहमति हर बात पर हो सकती है। वह असहमति हमेशा तार्किक हो, यह भी ज़रूरी नहीं है। मेरा तो मानना यह है कि इस तरह के सर्वेक्षण और रिपोर्ट्स हमें आईना दिखाने का काम करते हैं। इनकी आलोचना में अपनी ऊर्जा नष्ट करने की बजाय अगर उतनी ही ऊर्जा हम अपने यहां के हालात को बेहतर बनाने में लगाएं तो वह ऊर्जा का सही उपयोग होगा। आज़ादी के बाद से अब तक देश में काफी कुछ हुआ है। मैं उनसे सहमत नहीं कि सत्तर बरस में कुछ भी नहीं हुआ है। लेकिन यह बात भी उतनी ही सही है कि अभी हमें अपनी मंज़िल नहीं मिली है। हमारे देश का हर नागरिक खुशहाल हो, उसे एक सम्मानप्रद और गरिमापूर्ण जीवन मिले, हमारा देश सही अर्थों में एक कल्याणकारी राज्य बने, आम जन को उनकी ज़रूरत की सारी चीज़ें और सुख सुविधाएं बिना प्रयत्न और बिना अपमान (मुफ्तखोरी की बात कहना भी एक अपमान ही है!) के मिले – यह हम सबका सपना होना चाहिए। सपना भी, और संकल्प भी!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

भोजन एवं जीवनशैली दीर्घायु जीवन के आधार हैं

डॉ. रामावतार शर्मा

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो मनुष्य ने सदैव ही शतायु जीवन की आकांक्षा रखी है। यही कारण है कि पूरे विश्व में प्राचीन देवता, ऋषि मुनि और कई शासकों के सैंकड़ों साल तक जिंदा रहने की कल्पनाएं की गई हैं। इन जन धारणाओं के आज के वैज्ञानिक दौर में भी जिंदा रहने का सबसे प्रमुख कारण हर मनुष्य की अपनी दीर्घायु की कामना है। लोग कहते रहते हैं कि एक दिन मृत्यु सब को आने वाली है पर चंद लोग ही ऐसा कहते सुने गए हैं कि एक दिन मेरी भी मृत्यु आने वाली है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हर व्यक्ति की सोच में अमरत्व छिपा बैठा होता है। परंतु अमरत्व धरती पर न तो कर्म से मिलने वाला है और न ही त्याग तपस्या से! परंतु जिंदगी का शतक तो संभव है और शतक भी स्वस्थ और क्रियाशील शरीर के साथ लगाया जा सकता है। अमरत्व अगर कल्पना मात्र है तो सौ साल का जीवन संभव है और यह हमारे जीवन का एक लक्ष्य भी होना चाहिए।

सामाजिक सक्रियता एवम् उपयोगिता, समयानुसार पौष्टिक आहार और स्वस्थ आदतों के सहारे शतायु जीवन संभव है। सन 1945 के बाद से चिकित्सा विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी के विकास तथा परिवहन की सुविधाओं के फलस्वरुप शतायु एवम् स्वस्थ लोगों की संख्या विश्व में लगातार बढ़ती जा रही है। सन 1900 से पहले दुनिया में गिने चुने लोग ही सौ साल के हुआ करते थे। हाल ही में 2021 की गणना के अनुसार विश्व में 5,73,000 शतायु लोग पंजीकृत हुए हैं। अंदाजा लगाया जा रहा है कि सन 2050 तक विश्व में तीन करोड़ सत्तर लाख लोग सौ साल की उम्र का आनंद ले रहे होंगे, वे अपने जन्मदिन को तीन अंकों में लिख रहे होंगे। जब तीन चार करोड़ लोग ऐसा कर सकेंगे तो दस करोड़ क्यों नहीं ऐसा कर सकेंगे या फिर हर व्यक्ति इस उद्देश्य को क्यों न प्राप्त कर पाएगा? यहां यह कहना उचित होगा कि शतायु जीवन तो संभव है परंतु यह थाली में परोसा नहीं मिलेगा बल्कि इसको पाने के लिए आपको गंभीर प्रयास करने होंगे। धरती पर पांच विशिष्ट क्षेत्र हैं जहां पर अधिकतर लोग लंबी उम्र तक जीवित रहते है। ये क्षेत्र इटली के सरदिनिया, ठीस के इकारिया, कोस्टारिका के निकोया, कैलिफोर्निया के लोमा लिंडा और जापान के ओकीनावा इलाकों में हैं और इन इलाकों को को ब्लू ज़ोन कहा जाता है।

अध्ययन से पता चला है कि इन सब लोगों की जीवनशैली में 9 समानताएं हैं जिन्हें 9 की शक्ति भी कहा जाता है। ये गुण इस प्रकार हैं– पैदल चलना, उद्देश्यपूर्ण जीवन, तनाव से दूरी, 80 प्रतिशत पेट भरते ही भोजन की समाप्ति, भोजन मुख्यतया वनस्पति आधारित, शराब के उपभोग पर नियंत्रण, साझा समाज का जीवन, अपने परिवार की देखभाल और स्वस्थ जीवनशैली को सहयोग देता समाज।

ब्लू जोन के लोगों के भोजन में 90 प्रतिशत खाद्य पदार्थ पारंपरिक वनस्पति आधारित, पूर्ण अनाज और फाइबर से परिपूर्ण होते हैं और जटिल कार्बोहायड्रेट्स आधारित होते हैं। जटिल कार्ब्स धीमे से पचते हैं जिसके कारण रक्त शर्करा नियंत्रण में रहती है। ब्लू जोन भोजन की कुछ विशेषताएं होती हैं– भोजन में शक्कर युक्त पदार्थों पर नियंत्रण, खाना घर पर पकाना और उसका तुरंत सेवन, मांसाहार पर नियंत्रण, खाद्य पदार्थों की खरीद पर पर्याप्त समय देना जिसके फलस्वरूप बेहतर चयन हो सके, घर के हर कोने में सब्जी की खेती, जहां तक संभव हो खाद्य पदार्थ सीधे किसान के खेत से खरीदना और किसान को कुछ इनाम देना, औषधीय पत्तियां, जड़ें और फल सब्जियों का प्रचुरता से उपभोग और भोजन का पूरे आनंद एवम् मनोयोग से सेवन। इन सब के अलावा ब्लू जोन के लोग अकेलेपन से दूर रहते हैं। उनका जीवन सामूहिक समाज का जीवन होता है। अकेलेपन का अहसास दीर्घायु होने के रास्ते की एक बड़ी बाधा है।

मेरे परिवार के दो चार लोग, दफ्तर और मेरा फ्लैट या घर और इसी में लड़ता झगड़ता बहस करता मैं। इस जीवनशैली से जीवन का शतक बस किसी संयोग से ही लग सकता है और यदि लग भी गया तो बिस्तर पर पड़े ही समय गुजरेगा। सामाजिक उपयोगिता और संपर्क की अपनी ऊर्जा होती है इसलिए भौतिक और मानसिक दड़बे से बाहर निकलिए, जीवन के उत्सव में शामिल हो कर शतायु होने का स्वस्थ एवम् तंदुरुस्त रहते हुए आनंद लीजिए। सौ का आंकड़ा पाने की तैयारी बीस से चालीस की उम्र में ही करनी पड़ती है क्योंकि कमजोर सड़ी गली लकड़ी से मजबूत सीढ़ी बनाना संभव नहीं हो सकता है।

डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

चुनाव में शिक्षा के मुद्दों पर चर्चा होनी चाहिए

प्रो. अशोक कुमार

शिक्षा एक समृद्ध और विकसित राष्ट्र के निर्माण के लिए आवश्यक है। यह लोगों को रोजगार के अवसरों के लिए बेहतर ढंग से तैयार करता है, उन्हें अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने में मदद करता है, और सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है।भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत सभी नागरिकों को 6 से 14 वर्ष की आयु तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार है। यह महत्वपूर्ण है कि सरकारें इस अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त प्रयास शिक्षा लड़कियों और महिलाओं को सशक्त बनाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह उन्हें आत्मनिर्भर बनने और समाज में योगदान करने में मदद करता है। शिक्षा सभी नागरिकों के लिए समान अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह गरीबी, भेदभाव और सामाजिक बुराइयों को कम करने में मदद करता है।

शिक्षित नागरिक बेहतर निर्णय लेने में सक्षम होते हैं और वे अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के प्रति अधिक जागरूक होते हैं। यह लोकतंत्र को मजबूत बनाने में मदद करता है।

भारत के चुनावों में शिक्षा विषय पर चर्चा होना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह देश के भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जो लोगों को सशक्त बनाता है और उन्हें अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने में मदद करता है। यह सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए भी आवश्यक है। शिक्षा एक ऐसा मुद्दा है जो सभी नागरिकों को प्रभावित करता है, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म, लिंग या सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से हों।

भारत के चुनावों में शिक्षा विषय पर चर्चा कम होने के कई कारण हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं: शिक्षा आमतौर पर राजनीतिक दलों की प्राथमिकता सूची में ऊपर नहीं होती है। वे अन्य मुद्दों जैसे कि अर्थव्यवस्था, सुरक्षा, भ्रष्टाचार, किसान और सामाजिक कल्याण पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। भारत में राजनीति जाति और धर्म से बहुत प्रभावित होती है। राजनीतिक दल अक्सर इन मुद्दों पर शिक्षा जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं। शिक्षा के महत्व के बारे में मतदाताओं में जागरूकता की कमी भी एक कारण है। कई मतदाता शिक्षा को उतना महत्वपूर्ण मुद्दा नहीं मानते जितना कि अन्य मुद्दे हैं। शिक्षा के मुद्दे अक्सर जटिल होते हैं और उन्हें समझाना मुश्किल हो सकता है। राजनीतिक दल अक्सर इन मुद्दों पर सरल और आकर्षक समाधान पेश करते हैं, जो हमेशा सही नहीं होते हैं। मीडिया अक्सर शिक्षा जैसे मुद्दों पर उतना ध्यान नहीं देता जितना कि अन्य मुद्दों पर देता है। यह मतदाताओं के बीच इन मुद्दों के बारे में जागरूकता को कम कर सकता है। अनुभवहीनता: कई राजनेताओं और मतदाताओं के पास शिक्षा के क्षेत्र में कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं होता है। इससे उन्हें इस मुद्दे के महत्व को समझने और इस पर चर्चा करने में मुश्किल हो सकती है। शिक्षा अक्सर अन्य मुद्दों से प्रभावित होती है जैसे कि जाति, धर्म, और भाषा। इससे इस मुद्दे पर राजनीतिक और सामाजिक बहस करना मुश्किल हो सकता है। इन कारणों से, शिक्षा अक्सर भारत के चुनावों में एक प्रमुख मुद्दा नहीं बन पाती है। हालांकि, यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षा में सुधार करके, भारत अपने लोगों को बेहतर जीवन जीने और देश के विकास में योगदान करने में मदद कर सकता है।

हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि शिक्षा के मुद्दे पर धीरे-धीरे जागरूकता बढ़ रही है। कुछ राजनीतिक दल और सामाजिक कार्यकर्ता शिक्षा को चुनावों में एक प्रमुख मुद्दा बनाने के लिए काम कर रहे हैं। यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं कि शिक्षा को भारत के चुनावों में एक प्रमुख मुद्दा कैसे बनाया जा सकता है: मतदाताओं को शिक्षा के महत्व और शिक्षा के मुद्दों के बारे में शिक्षित करना महत्वपूर्ण है। मतदाताओं को राजनीतिक दलों पर शिक्षा को अपनी प्राथमिकताओं में से एक बनाने के लिए दबाव डालना चाहिए। मीडिया को शिक्षा के मुद्दों पर अधिक ध्यान देना चाहिए और इन मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने में मदद करनी चाहिए।

चुनावों में शिक्षा पर चर्चा के दौरान कई मुद्दों पर विचार किया जाना चाहिए। इनमें शामिल हैं: शिक्षा संस्थानो मे विभिन्न स्तरों मे भ्रष्टाचार – नियुक्ति से लेकर शिक्षा संस्थानो मे विभिन्न प्रावधानों मे गबन, रिश्वत, युवाओं, महिलाओं, शिक्षक आदि को सताया जाता है! भारत में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की आवश्यकता है। सरकार को यह सुनिश्चित करने के लिए काम करना चाहिए कि सभी बच्चों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा मिले। भारत में अभी भी कई बच्चे हैं जिनके पास शिक्षा तक पहुंच नहीं है। सरकार को यह सुनिश्चित करने के लिए काम करना चाहिए कि सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिले। भारत में शिक्षा का वित्तपोषण एक बड़ी चुनौती है। सरकार को शिक्षा के लिए अधिक धन आवंटित करना चाहिए और शिक्षा को अधिक किफायती बनाना चाहिए। भारत में शिक्षा प्रणाली में कई सुधारों की आवश्यकता है। सरकार को शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और कुशल बनाने के लिए काम करना चाहिए।

चुनावों में शिक्षा पर चर्चा करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि शिक्षा भारत के राजनीतिक एजेंडे में एक प्रमुख मुद्दा बना रहे। यह सुनिश्चित करने में भी मदद करेगा कि सरकार शिक्षा में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाए।

यहां कुछ विशिष्ट प्रश्न दिए गए हैं जो चुनावों में शिक्षा पर चर्चा के दौरान पूछे जा सकते हैं: शिक्षा शिक्षण संस्थानो में भ्रष्टाचार, शिक्षा पर सुधार के लिए आपकी पार्टी की क्या योजनाएं हैं?आप शिक्षा की गुणवत्ता कैसे सुधारेंगे?आप शिक्षा तक पहुंच कैसे बढ़ाएंगे?आप शिक्षा का वित्तपोषण कैसे करेंगे? आप शिक्षा प्रणाली में क्या सुधार करेंगे?

इन सवालों के जवाब सुनकर, मतदाता यह तय कर सकते हैं कि कौन सी पार्टी शिक्षा के लिए सबसे अच्छी नीतियां पेश कर रही है।

प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय।

शीतला अष्टमी का पर्व आज, माता को ठंडे पकवानों का भोग लगेगा

चाकसू स्थित शील की डूंगरी, चंदलाई व नायला सहित कई स्थानों पर मेले भरेंगे

चाकसू, (निसं)। शीतला अष्टमी का पर्व सोमवार को परंपरागत रूप से मनाया जाएगा। इस मौके पर चाकसू स्थित शील की डूंगरी, चंदलाई व नायला सहित कई स्थानों पर मेले भरेंगे। महिलाएं सज-धज कर गीत गाते हुए शीतला माता के मंदिरों में भोग लगाएंगी और पथवारी पूज कर सुख-समृद्धि की कामना करेंगी। माता को शीतल व्यंजनों का भोग अर्पण करने के बाद घरों में लोग ठंडा भोजन ग्रहण करेंगे।

मान्यता के अनुसार शीतला माता के पूजन और ठंडा भोजन करने से माता प्रसन्न होती है और शीतला जनित रोगों का प्रकोप कम होता है। रविवार को माता को भोग लगाने के लिए घर-घर पकवानों की खुशबू महक रही थी। महिलाएं देर रात तक माता के भोग के लिए कांजी बडा, मोहनथाल, गुजिया, पेठे, सकरपारे, पूड़ी, पापड़ी, हलुआ, राबड़ी, मक्का की घाट समेत कई व्यंजन बनाने में लगी हुई थी। भोग और पूजन की सामग्री की खरीदारी के कारण सुबह से ही बाजारों में रौनक बनी हुई है।

शील की डूंगरी पर सत्संग के साथ दो दिवसीय शीतला माता के मेले का शुभारंभ हो गया है। इसमें जयपुर एवं आसपास के जिलों के हजारों श्रद्धालु मेले में आएंगे। लोग शीतला माता को विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का भोग अर्पण कर सुख समृद्धि की कामना करेंगे। मेले की सुरक्षा व्यवस्था में पुलिस उपायुक्त दिगंत आनंद, अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त पारस जैन, एसीपी चाकसू सुरेन्द्र सिंह और थाना अधिकारी कैलाश दान, नगर पालिका उप जिला अस्पताल समेत कई विभागों के अधिकारी कर्मचारी 350 से अधिक पुलिस के जवान विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं को संभालने में लगे हुए हैं। असामाजिक तत्वों पर नजर रखने के लिए जगह-जगह सीसीटीवी कैमरे लगाए जा रहे हैं। मेले में लगने वाले हाट बाजार में ग्रामीण खरीददारी करेंगे। इस मेले में करीब एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। मेले के दौरान निमोडिया मोड चाकसू से जयपुर की और बाइपास से पुरानी सड़क पर सभी प्रकार के भारी वाहनों का प्रवेश वर्जित रहेगा।

शीतला माता को महिलायें भोग लगाकर परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करेंगी।

- **माता को शीतल व्यंजनों का भोग अर्पण करने के बाद घरों में लोग ठंडा भोजन ग्रहण करेंगे**
- **शील की डूंगरी पर सत्संग के साथ दो दिवसीय शीतला माता के मेले का शुभारंभ हुआ**

कला प्रदर्शनी "रंगीला राजस्थान" का उदघाटन

भीलवाड़ा, (निसं)। आकृति कला संस्थान एवं जिला प्रशासन भीलवाड़ा के सहयोग से आयोजित राजस्थान दिवस के उपलक्ष में आयोजित भीलवाड़ा के कलाकारों की विशाल कला प्रदर्शनी रंगीला राजस्थान का उद्घाटन महामण्डलेश्वर स्वामी हंसराम महाराज, पद्मश्री जानकीलाल भॉड, तिलोकचन्द छाबड़ा, पूजा गलुण्डिया, ममता मोदानी के करकमलों से ग्रामीण हाट कला दीर्घा में सम्पन्न हुआ। संस्था सचिव कैलाश पालिया ने बताया कि इस कला प्रदर्शनी में भीलवाड़ा के 35 वरिष्ठ एवं युवा कलाकारों की 70 कलाकृतियों को प्रदर्शित किया गया है। जिसमें मुख्य रूप से गोवर्धन सिंह पंवार के मूर्तिशिल्प इकबाल हुसैन के जलरंग, सत्यनारायण सोनी के राजस्थान की ऐतिहासिक इमारते, लक्ष्मीनारायण वर्मा के राजस्थानी जीवन, सुशील सोनी की पिछवाई, राजेश जोशी की फड़ कला, दीपिका पाराशर के ग्राफिक्स, ज्योति पारीक की पंचतत्व, सीमा सांखला के जल चित्र, बालकिशन जांगिड़ की सिनेमा यात्रा, सत्येश एवं मुकेश विश्वकर्मा के यथार्थवादी कृतियों के साथ-साथ खुशी कोठारी, खुशी पिपाड़ा, अनु प्रजापत, उमंग उपाध्याय, सुमित गुर्जर, माही मूंदड़ा, कोमल रानी, दिव्या जैन, अंजली सुथार, अनुष्का पाराशर, शीला बलाई, बबलु रेगर सहित युवा कलाकारों की कलाकृतियों को भी प्रदर्शित किया गया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 1 अप्रेल, 2024

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, मूल नक्षत्र रात्रि 11:12 तक, वारियान योग रात्रि 8:29 तक, विष्टि करण प्रातः 9:20 तक, चन्द्रमा धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग रात्रि 11:12 तक है। भद्रा प्रातः 9:20 तक रहेगी। बुध वक्री रात्रि 3:45 तक है। आज शीतला सप्तमी पूजन है। आज बास्योडा (स्वर्य सिद्ध अबूझ मुहूर्त) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:54 तक, शुभ 9:26 से 10:58 तक, चर 2:03 से 3:35 तक, लाभ-अमृत 3:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:54, सूर्यास्त 6:24

मेष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च होगा।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह
परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। धार्मिक स्थान की संभव है।

कन्या
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।

धनु
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मकर
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। परिजनों के व्यवहार के कारण परेशानी हो सकती है।

कुंभ
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।